जैव विविधता का पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रभाव, संरक्षण एवं महत्व

अनिल कुमार सिंह
शोध छात्र,भूगोल विभाग, वीर कुवँर सिंह, विश्वविद्यालय, आरा

सारांश

मानव सभ्यता के विकास की धुरी जैव-विविधता मुख्यत: आवास विनाश, आवास विखण्डन, पर्यावरण प्रदूषण, विदेशी मूल के वनस्पतियों के आक्रमण, अतिशोषण, वन्य-जीवों का शिकार, वनविनाश, अति-चर्ग्इ बीमारी आदि के कारण खतरे में है। अत: पारिस्थितिक संतुलन, मुष्य की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति एवं प्राकृतिक आपदाओं (बाढ़, सूखा, भू-स्खलन आदि) से मुक्ति के लिए जैव- विविधता का संरक्षण आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। विश्व स्तर पर जैव विविधता का संरक्षण प्रमुख रूप से आवश्यक एवं अनिवार्य है। मानव ने जैव विविधता को बनाए रखने की आवश्यकता की ओर आँखे मूँद ली है विभिन्न गतिविधियों में लिफ्त हो रहे हैं जो उसी में गिरावट का कारण बन रहे हैं।

शब्द कुंजी: आनुवांशिक, जैव-विविधता, पर्यावरण, संतुलन

परिचय:

जैव-विविधता जीवों के बीच पायी जाने वाली विभिन्नता है जो कि प्रजातियों में, प्रजातियों के बीच और उनकी पारितंत्रों की विविधता को भी समाहित करती है। जैव-विविधता शब्द का प्रयोग वाल्टर जी रासन ने 1985 में किया था। जैव-विविधता तीन प्रकार की हैं। (i) आनुवांशिक विविधता, (ii) प्रजातीय विविध ता (iii) पारितंत्र विविधता। प्रजातियों में पायी जाने वाली आनुवंशिक विभिन्नता को आनुवांशिक विविधता के नाम से जाना जाता है। यह आनुवांशिक विविधता जीवों के विभिन्न प्रकार के अनुकूलन का परिणाम होती है। प्रजातियों में पायी जाने वाली विभिन्नता को प्रजातीय विविधता के नाम से जाना जाता है। किसी भी विशेष समुदाय अथवा परितंत्र के उचित कार्य के लिये प्रजातीय विविधता का होना अनिवार्य होता है। पारितंत्र विविधता पृथ्वी पर पायी जाने वाली पारितंत्रों में विभिन्नता को कहते हैं जिसमें प्रजातियों का निवास होता है।

जैविक विविधता सामान्य रूप से विश्व में पायी जाने वाली विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों एवं जीव जन्तुओं से सम्बन्धित है जो कि प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप पर्यावरण से सम्बन्धित होते हैं।

जैव विविधता सजीव संघटकों में परिवर्त्तनशीलता और पारिस्थितिकी जटिलता है, जिसमें प्रजातियों और पारिस्थितिकी प्रणाली के अनतर्गत और उनके बीच की विविधता सम्मिलित है। खाद्य, औषधि और उद्योगों में होने वाले व्यय का जैविक विविधता से प्रत्यक्ष सम्बन्ध है। भारत विश्व के उन 17 विशाल जैविक विविधता वाले देशों में सम्मिलित है, जहाँ विश्व की 40 से 50 प्रतिशत जैव विविधता है।

जैविक विविधता का वैश्विक स्तर पर प्रभाव

पर्यावरण के अन्तर्गत जैविक विविधता महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य तथ्य है। इसका सन्तुलन एवं संरक्षण पर्यावरण एवं मानव जीवन के लिये परमावश्यक है। जैविक कारकों के मध्य परस्पर अन्तर्निर्भरता पायी जाती है। समस्त जैविक तत्व एक दूसरे पर निर्भर होते हैं। इनकी निर्भरता ही प्राकृतिक पर्यावरण को सन्तुलित बनाये रखती है। इनके संरक्षण के अभाव में सन्तुलित पर्यावरण की कल्पना नहीं की जा सकती है। **जैविक विविधता का प्रभाव:**

जैविक विविधता का प्रभाव सम्पूर्ण विश्व पर पड़ता है। इसके प्रभाव के सन्दर्भ में पर्यावरण से

सम्बन्धित विद्वानों ने चेतावनी दी है कि जैव विविधता का संरक्षण होना चाहिये। अन्यथा इसके गम्भीर परिणाम देखने पड़ंगे। जैव विविधता के प्रभाव हो निम्नलिखित स्तरों पर प्रस्तुत किया जा सकता है-

१. वैश्विक स्तर पर जैव विविधता का प्रभाव: सम्पूर्ण भूमण्डल को जैव विविधता के आधार पर बारह वर्गों में विभाजित किया है। जैव विविधता भूमध्य रेखा के क्षेत्र में सर्वाधिक रूप से होती है। इसके अन्तर्गत उष्ण कटिबन्धीय वर्षा वाले नव क्षेत्र आते हैं जहाँ कि जैव विविधता प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होती है। इसके अन्तर्गत विभिन्न प्रकार की प्रजातियों को सम्मिलित किया जाता है। जैव विविधता के विनाश के कारण विश्व स्तर पर पर्यावरण में असन्तुलन हो गया है। इसके द्वारा मानवीय जीवन का अस्तित्त्व समाप्त होने की स्थिति में हो गया है। वैश्विक स्तर पर विलुप्त प्रजातियों की संख्या में वृद्धि से औषधियों में कमी, जलवायु में परिवर्तन, वर्षा का अभाव एवं मरूस्थलीकरण आदि अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गयी है। जोकि मानव के विकास में बाधक सिद्ध होती है। पर्यावरणीय असन्तुलन के कारण विश्व स्तर पर कृषि उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। पृथ्वी का सन्तुलन बिगड़ने लगा है। भूकम्प एवं महामारी जैव विविधता के विनाश का ही परिणाम है। सुनामी लहरों द्वारा जो विनाश का तांडव हुआ उसके पीछे भी पर्यावरणीय असन्तुलन का ही हाथ है। जैव विविधता के विनाश से होने वाले प्रभाव नकारात्मक रूप में विश्व स्तर पर देखे जाते हैं। जैव विविधता के संरक्षण से होने वाले प्रभाव सकारात्मक रूप में विश्व स्तर पर देखे जाते हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर जैव विविधता का प्रभाव- राष्ट्रीय स्तरपर जैव विविधता उस देश की वन्य जीव-जन्तु एवं वनस्पतियों से संबन्धित होती है। इस सन्दर्भ में भारत एक सम्पन्न राष्ट्र है। भारत के उत्तर पूर्वी हिमालय एवं घाट में प्रचुर मात्रा में जैव विविधता पायी जाती है। पूर्वी हिमालय के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ एवं जीव-जन्तु पायें जाते हैं। इस क्षेत्र में सदाबहार वनस्पतियाँ होती है। लगभग 41 लाख हैक्टयर भूमि में नमी होने के कारण जैव विविधता फैली हुई है। वर्तमान समय में इसके विनाश के कारण जैव विविधता के नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं।

जैव विविधता के विनाश के कारण गैसीय संरचना अशुद्ध हो गयी है अर्थात् वायुमण्डल में प्रत्येक गैस का निश्चित अनुपात न होकर अनिश्चित अनुपात हो गया है। इसके विनश से किसी क्षेत्र में वर्षा का अधिकता से बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गयी है तथा किसी क्षेत्र में वर्षा की कमी से सूखा एवं अकाल की स्थिति उत्पन्न हो जाता है। यह सम्पूर्ण प्रभाव जैव विविधता के संरक्षण के अभाव में होता है। जलवायु में परिवर्तन के पीछे भी जैव विविधता के विनाश को ही कारण माना जाता है। जैसे-वनस्पतियों के विनाश के क्षेत्र विशेष में वर्षा कम होगी तथा गर्मी का प्रभाव अधिक होगा तो स्वाभाविक रूप से जलवायु उष्ण होगी। इस प्रकार जैव विविधता का विनश स्वाभाविक जलवायु में परिवर्त्तन कर देता है।

२. जैव विविधता के स्थानीय स्तर पर प्रभाव: राष्ट्रीय स्तर पर जैव विविधता उस देश की वन्य जीव-जन्तु एवं वनस्पतियों से सम्बन्धित होती है। इस सन्दर्भ में भारत एक सम्पन्न राष्ट्र है। भारत के उत्तर पूर्वी हिमालय एवं घाट में प्रचुर मात्रा में जैव विविधता पायी जाती है। पूर्वी हिमालय के क्षेत्र में विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ एवं जीव-जन्तु पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में सदाबहार वनस्पतियाँ होती है। लगभग 41 लाख हैक्टेयर भूमि में नमी होने के कारण जैव विविधता फैली हुई है। वर्तमान समय में इसके विनाश के कारण जैव विविधता के नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते हैं।

जैव विविधता के विनाश के कारण गैसीय संरचना अशुद्ध हो गयी है अर्थात् वायुमण्डल में प्रत्येक गैस का निश्चित अनुपात में होकर अनिश्चित अनुपात हो गया है। इसके विनाश से किसी क्षेत्र में वर्षा की अधिकता से बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गयी है तथा किसी क्षेत्र में वर्षा की कमी से सूखा एवं अकाल की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। यह सम्पूर्ण प्रभाव जैव विविधता के

संरक्षण के अभाव में होता है। जलवायु में परिवर्त्तन के पीछे भी जैव विविधता के विनाश को ही कारण माना जाता है। जैसे-वनस्पतियों के विनाश के क्षेत्र विशेष में वर्षा कम होगी तथा गर्मी का प्रभाव अधिक होगा तो स्वाभाविक रूप से जलवायु उष्ण होगी। इस प्रकार जैव विविधता का विनाश स्वाभाविक जलवायु में परिवर्तन कर देता है।

जैव विविधता का स्थानीय स्तर पर प्रभाव: (Effect of Biodiversity at Local Level)- भारतीय दृष्टिकोण से विचार किया जाय तो जैव विविधता का स्थानीय स्वरूप हिमालय क्षेत्र ही माना जा सकता है क्योंकि यहाँ पर कुछ विशेष प्रकार की स्थानीय प्रजातियाँ पायी जाती है, जैसे-काली मिर्च, इलायची, गूलर, पीपल, बेल, आम, नीम आदि। इस प्रकार की स्थानिक प्रजातियाँ पर्यावरण सन्तुलन में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। इनके विनाश होना, मानव समाज के लिये औषधि के रूप में इनका प्रयोग होता था। उससे भी वंचित होना एवं जलवायु परिवर्त्तन की सम्भावना आदि का होना । इनके विनाश का कारण होता है। आज मानव प्रत्येक स्तर पर पर्यावरण को सन्तुलित विविधता के विनाश का दुष्प्रभाव पड़ता है। जैसे-अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ पृथ्वी के गर्त में दबकर पृथ्वी की इससे उत्पादन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ेगा। अत: स्थानीय स्तर पर उत्पादन कम हो जाता है।

जैव विविधता का संरक्षण:

पर्यावरणीय प्रभाव के लिए जैव विविधता महत्त्वपूर्ण है। भगवान ने वनस्पतियों और जीवों की कई प्रजातियों बनाई है और इन विविध कृतियों के पीछे एक कारण है। लेकिन, हमें लगता है कि मानव ने जैव विविधता को बनाए रखने की आवश्यकता की ओर आँखे मूँद ली है विभिन्न गतिविधियों में लिफ्त हो रहे हैं जो उसी में गिरावट का कारण बन रहे हैं।

जैव विविधता के संरक्षण की आवश्यकता

हमारे खूबसूरत ग्रह ने हमें कई चीजें दी है। जो स्वाभाविक रूप से यहाँ होती हैं। प्राकृतिक संसाधन, नदियाँ, घाटियाँ, महासागर, जानवरों की विभिन्न प्रजातियों और पौधों और पेड़ों की सुंदर किस्में इनमें से कुछ हैं। लेकिन मनुष्य अपनी कृत्रिम दुनिया को विकसित करने और विकसित करने में इतना व्यस्त है कि वह इन सुंदर प्राकृतिक चीजों को खराब कर रहा है। आज, हमने उन अधिकांश चीजों को दोहन किया है जो प्रकृति में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थीं। इन प्राकृतिक चीजों के संरक्षण की सख्त जरूरत हैं। अन्य बातों के अलावा, जैव विविधता के संरक्षण के लिए एक गंभीर आवश्यकता है।

जैव विविधता को बनाए रखने की आवश्यकता को अक्सर अनदेखा किया गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि हम सोचते हैं कि हम खुद के लिए अच्छा कर रहे हैं, भले ही कई प्रजातियां अब तक विलुप्त हो गई हैं और अगर हम कुछ और विलुप्त हो जाते है।, तो भी हम अप्रभावित रहेंगे। हालांकि, यह एक गलत धारणा है। हमारे पर्यावरण के समुचित कार्य के लिए जैव विविधता की समृद्धि आवश्यक है। यदि जैव विविधता में गिरावट जारी है तो हम आने वाले समय में जीवित नहीं रह पाएंगे।

जैव विविधता के संरक्षण का महत्व:

कई कारणों से जैव विविधता का संरक्षण महत्वपूर्ण है। यहाँ कुछ मुख्य कारण है जिनकी वजह से हमे जैव विविधता का संरक्षण करना चाहिए।

खाद्य श्रृंखला की प्रक्रिया- जानवरों और पौधों की विभिन्न प्रजातियां अन्य जानवरों और जीवित जीवों के भोजन के स्रोत के रूप में काम करती हैं। जब एक प्रजाति विलुप्त हो जाती हैं या एक निवास से दूसरे में स्थानांतरित हो जाती है, तो इसका परिमणाम अन्य प्रजातियों के लिए विभिन्न प्रकार की कमियों में होता है।

भोजन की मुख्य स्रोत के रूप में कुछ प्रजातियाँ मृत्यु को भी भुला देती हैं। इस प्रकार समृद्ध जैव विविधता खाद्य श्रृंखला की प्रक्रिया में मदद करती है।

पोषण संबंधी जरूरतें- हम विभिन्न प्रकार के फल, सब्जियाँ, मीट, मछलियाँ और अन्य चीजें खाते हैं

क्योंकि वे हमारे शरीर के उचित कामकाज के लिए विभिन्न पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। पौधों और जानवरों की विविधता में गिरावट का मतलब हमारे द्वारा खाए जाने वाले भोजन की विविधता में गिरावट और इससे पोषक तत्वों की कमी हो सकती है।

साफ हवा- पेड़े और पौधे वातावरण से कार्बन डाइऑक्साइड और अन्य हानिकारक गैसो को बाहर निकालते हैं और ऑक्सीजन देने वाले जीवन को छोड़ देते हैं। कुछ पौधों और पेड़ों में हवा को शुद्ध करने और वातावरण को साफ रखने की अधिक क्षमता होती है। पेड़ों और पौधों की संख्या और प्रकार में गिरावट, हवा की गुणवत्ता को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है।

फसलों की बेहतर खेती- कई कीड़े, जीव और सूक्ष्मजीव जैसे केचुआ, कवक और बैक्टीरिया विभिन्न स्तरों पर काम करते हैं और मिट्टी को उपजाऊँ बनाते हैं और इसके स्वास्थ्य को बनाए रखते हैं। फसलों की खेती के लिए स्वस्थ और उपजाऊ मिट्टी निश्चित रूप से बेहत्तर है। इस तरह की प्रजातियों का नुकसान इस प्रकार हमारे लिए एक बहुत बड़ी क्षति हो सकती है।

चिकित्सा कारणों के लिए- विभिन्न रोगों को ठीक करने के लिए विभिन्न प्रजातियों को प्राप्त करने के लिए पेड़-पौधों की कई प्रजातियों का उपयोग किया जाता है। औषधीय प्रयोजनों की सेवा करने वाले कई पौधे अतीत में विलुप्त हो गए हैं और कई अन्य वैज्ञानिकों द्वारा अपनी उपयोगिता की खोज करने से पहले ही विलुप्त होने की संभावना है।

जैव-विविधता का महत्वः- जैव-विविधता का मानव जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। जैव-विविधता के बिना पृथ्वी पर मानव जीवन असंभव है। जैव-विविध ता के विभिन्न महत्व निम्नलिखित है-

1. जैव-विविधता भोजन, कपड़ा, लकड़ी, ईधन तथा धारा की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। विभिन्न प्रकार की फसलें जैसे गेहूँ, धान, जौ, मक्का, ज्वार, बाजरा, रागी, अरहर, चना, मसूर आदि से हमारी भोजन की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है। सागवान, साल, शीशम आदि जैसे वृक्षों की प्रजातियों निर्माण कार्यों हेतु लकड़ी की आवश्यकताओं की पूति करती हैं।

2. जैव-विविधता कृषि पैदावार बढ़ाने के साथ-साथ रोगरोधी तथा कीटरोधी फसलों की किस्मों के विकास में सहायक होती है। हरित क्रांति के लिए उत्तरदायी गेहूँ की बौनी किस्मों का विकास जापान में पाये जाने वाली नारीन-10 नामक गेहूँ की प्रजाति की मदद से किया गया था।

3. वानस्पतिक जैव-विविधता औषधीय आवश्यकताओं की पूर्ति भी करती है। एक अनुमान के अनुसार आज लगभग 30 प्रतिशत उपलब्ध औषधियों को उष्णकटिबंधीय वनस्पतियों से प्राप्त किया जाता है। उष्णकटिबंधीय शाकीय वनस्पति सदाबहार विनक्रिस्टीन तथा विनव्लास्टीन नामक क्षारों का स्रोत होता है जिनका उपयोग रक्त कैंसर के उपचार में होता है। सर्पगंधा पादप रेसर्पीन नामक महत्त्वपूर्ण क्षार का स्रोत होता है जिसका उपयोग उच्च-रक्तचाप के उपचार में किया जाता है।

4. जैव-विविधता पर्यावरण प्रदूषण के निस्तारण में सहायक होती है। प्रदूषकों का विघटन तथा उनका अवशोषण कुछ पौधों की विशेषता होती है। सदाबहार नामक पौधे में ट्राइनाइट्रोटालुइन जैसे घातक विस्फोटक को विघटित करने की क्षमता होती है। सूक्ष्म-जीवों की विभिन्न प्रजातियों जहरीले बेकार पदार्थों के साफ-सफाई में सहायक होती है।

5. जैव-विविधता में संपन्न वन पारितंत्र कार्बन डाइऑक्साइड के प्रमुख अवशोषक होते हैं। कार्बन डाइओक्साइड हरित गृह गैस है जो वैश्विक तपन के लिये उतरदायी है। उष्णकटिबंधीय वनविनाश के कारण आज वैश्विक तापमान में निरंतर वृद्धि हो रही है जिसके कारण भविष्य में वैश्विक जलवायु के अव्यवस्थित होने का खतरा दिनोंदिन बढ़ रहा है।

6. जैव-विविधत मृदा निर्माण के साथ-साथ उसके संरक्षण में भी सहायक होती है। जैव-विविधता मृदा संरचना को सुधारती है, जल-धारण क्षकता एवं

पोषक तत्वों की मात्रा को बढ़ाती है। जैव-विविधता जल संरक्षण में भी सहायक होती है क्योंकि यह जलीय चक्र को गतिमान रखती है। वानस्पतिक जैव-विविधता, भूमि में जल रिसाव को बढ़ावा देती है जिससे भूमिगत जलस्तर बना रहता है।

7. जैव-विविधता पोषक चक्र को गतिमान रखने में सहायक होती है। वह पोषक तत्वों की मुख्य अवशोषक तथा स्रोत होती है। मृदा की सूक्ष्मजीवी विविधता पौधों के मृत भाग तथा मृत जन्तुओं को विघटित कर पोषक तत्वों को मृदा में मुक्त कर देती है जिससे यह पोषक तत्व पुनः पौधों को प्राप्त होते हैं।

8. जैव-विविधता पारितंत्र को स्थिरता प्रदान कर पारिस्थितिक संतुलन को बरकरार रखती है। पौधे तथा जन्तु एक दूसरे से खाद्य श्रृंखला तथा खाद्य जाल द्वारा जुड़े होते हैं। एक प्रजाति की विलुप्ति दूसरे के जीवन को प्रभावित करती है। इस प्रकार पारितंत्र कमजोर हो जाता है।

9. पौधे शाकभक्षी जानवरों के भोजन के स्रोत होते हैं जबकि जानवरों का मांस मनुष्य के लिये प्रोटीन का महत्वपूर्ण स्रोत होता है।

10. जैविक रूप से संपन्न वन पारितंत्र, वन्य-जीवों तथा आदिवासियों का घर होता है। आदिवासियों की संपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति वनों द्वारा होती है। वनों के क्षय से न सिर्फ आदिवासी संस्कृति प्रभावित होगी अपितु वन्य-जीवन भी प्रभावित होगा।

जैव-विविधता का संरक्षण- जैव विविधता संरक्षण का आशय जैविक संसाधनों के प्रबंधन से है जिससे उनके व्यापक उपयोग के साथ-साथ उनकी गुणवत्ता भी बनी रहे। चूँकि जैव-विविधता मानव सभ्यता के विकास की स्तम्भ है इसलिए इसका संरक्षण अति आवश्यक है। जैव-विविधता हमारे भोजन, कपड़ा, औषधीय, ईंधन आदि की आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। जैव-विविधता पारिस्थितिक संतुलन को बनाये रखने में सहायक होती है। इसके अतिरिक्त यह प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, सूखा आदि से राहत प्रदान करती है। वास्तव में जैव-विविधता प्रकृति की स्वभाविक संपत्ति है और इसका क्षय एक प्रकार से प्रकृति का क्षय है। अतः प्रकृति को नष्ट होने से बचाने के लिये जैस-विविधता को संरक्षण प्रदान करना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

जैव विविधता संरक्षण के तरीके निम्नलिखित जैव विविधता के संरक्षण में मदद कर सकते हैं:

जनसंख्या पर नियंत्रण- बढ़ती मानव जनसंख्या के कारण जैव विविधता में गिरावट का एक कारण है। विभिन्न मानव के लिए पेड़ों को काट दिया जा रहा है और बड़े पैमाने पर जानवरों को नुकसान पहुँचाया जा रहा है।

प्रदूषण पर नियंत्रण रखें- बढता प्रदूषण हमारे खूबसूरत ग्रह को नुकसान पहुँचा रहा है। तापमान बढ़ रहा है और बाद में ग्लोबल वार्मिंग का कारण बन रहा है। जलवायु परिवर्त्तन, वायु प्रदूषण और भूमि प्रदूषण और जल प्रदूषण की बढती मात्रा कई प्रजातियों में विभिन्न वनस्पतियों और जीवों की कई प्रजातियों वायुमंडल में इन परिवर्तनों का सामना करने में असमर्थ हैं और उनके लिए जीवित रहना बेहद मुश्किल हो जाता है। इसे कम करने के लिए प्रदूषण को बढ़ावा देने वाली गतिविधियों मे कटौती करना आवश्यक है।

वनों की कटाई पर नियंत्रण रखें-

वनस्पतियों और जीवों की विभिन्न किस्मों के लिए वन एक निवास स्थान हैं। वनों की कटाई कई जंगली जीवों के साथ-साथ विभिन्न सुंदर पौधों के विलुप्त होने का एक मुख्य कारण रहा है। निवास स्थान का नुकसान जंगली जानवरों को कमजोर बनाता है। वे नष्ट वातावरण में जीवित रहने में असमर्थ हैं। जबकि कुछ अन्य स्थानों पर जाने से बचने के लिए संघर्ष अन्य लोगों को नए परिवेश और मरने के लिए अनुकूल करने में असमर्थ हैं।

जागरूकता फैलाएँ- इसके अलावा, जागरूकता फैलाने के लिए जैव विविधता के संरक्षण के लिए

सबसे अच्छे तरीकों में से एक है। लोगो को इस मुद्दे के बारे में संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है ताकि वे जिम्मेदारी से कार्य करें और जैव विविधता के संरक्षण में योगदान दें। सरकार बड़े स्तर पर ऐसा कर सकती है जबकि हम सोशल मीडिया के माध्यम से जागरूकता फैला सकते हैं।

जैव विविधता के संरक्षण की आवश्यकता:

यदि हम इस गति से वनस्पतियों और जीवों की विभिन्न प्रजातियों को खोते रहेंगे, तो हमारा अस्तित्व पृथ्वी पर अत्यंत कठिन हो जाएगा। ऐसा इसलिए है क्योंकि पौध या जानवर की प्रत्येक प्रजाति या तो बडे या छोटे, अपने स्वयं के अनूठे तरीके से पारिस्थितिक संतुलन के रखरखाव की दिशा में योगदान करते हैं। इनके नुकसान से पर्यावरण के साथ-साथ अन्य जीवों पर भी भारी असर पड सकता है। उदाहरण के लिए, हम विभिन्न प्रकार के पौधों और जानवरों पर निर्भर हैं क्योंकि वे हमारे लिए भोजन के स्रोत के रूप मे काम करते हैं। वें विभिन्न पोषण आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। पेड लकड़ी और अन्य कच्चे माल प्रदान करते हैं जो कई चीजों को शिल्प करने के लिए उपयोग किए जाते हैं जो हमारे महत्त्वूपर्ण हैं। इसी तरह दवाइयाँ तैयार करने के लिए विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियाँ का उपयोग किया जाता है। इसी तरह, कीटों और जानवरों की विभिन्न प्रजातियां पर्यावरण को जीने के लायक बनाने में अपने तरीके से योगदान देती हैं। अगर विविधता की यह समृद्धि बरकरार नहीं है, तो हमें कई चीजों से हाथ धोना पड़ेगा और यह हमारे जीवन को कठिन बना देगा। यही कारण है कि जैव विविधता के संरक्षण के लिए यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

जैव विविधता का महत्त्व:

जैव विविधता मानव के अस्तित्त्व के लिए आवश्यक एवं अनिवार्य क्रियाकलाप है जो वातावरण मे आवश्यक तत्त्वों का समन्वय करता हैं इसके संरक्षण से मानव एवं पर्यावरण का सन्तुलित एवं समुचित विकास हो सकता है।

1. मृदा संरक्षण के कार्य में वृद्धि होती है अर्थात् भूमि की उत्पादकता में वृद्धि होती है।
2. जल संरक्षण का कार्य भी होता है, जो मानव के अस्तित्त्व के लिए प्रमुख साधन है।
3. कीट-पतंगों के नियन्त्रण एवं परागण के माध्यम से नवीन प्रजातियों के विकास में योगदान मिलता है।
4. वायु मण्डल को शुद्ध करने में तथा पर्यावरण को सन्तुलित करने में जैव विविधता को महत्त्वूपर्ण स्थान होता है।
5. जैव विविधता के द्वारा मानव को विभिन्न प्रकार की औषधियाँ प्राप्त होती है जिससे मानव स्वस्थ रह सकता है।

निष्कर्ष:

जैव विविधता मानव के लिए द्विपक्षीय रूप में कार्य करती है। यदि मानव द्वारा जैव विविधता को संरक्षण प्रदान किया जता है तो उसका सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। अत: पर्यावरण को नकारात्मक प्रभाव से बचाने के लिए जैव विविधता का संरक्षण करना अनिवार्य है। इस प्रकार, पृथ्वी पर जीवित प्राणियों के अस्तित्व के लिए जैव विविधता की समृद्धि आवश्यक है। इस मुद्दे को गंभीरता से लिया जाना चाहिए और जव विविधता के संरक्षण के लिए कड़े कदम उठाए जाने चाहिए। जैव विविधता के संरक्षण का अत्यधिक महत्व है। हम सभी को इसके पतन की दिशा में योगदान देने के बजाय जैव विविधता के संरक्षण के लिए प्रयास करना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1. शर्मा, पी.डी. (2004) इकोलॉजी एण्ड एनवायरन्मेन्ट, रस्तोगी पब्लिकेशन्स,मेरठ, इण्डिया।
2. सिंह, ए. (2007) वोरहेविया डिफ्यूजा: एन ओवर-ऐक्सप्लॉयटैड प्लाण्ट ऑफ मेडिसिनल इमपॉरटैन्स इन रूरल एरियाज ऑफ ईस्टर्न उत्तर प्रदेश, करेण्ट साइन्स, खण्ड-93,अंक-4 पृ.-4461
3. सिहं एच.पी.,पर्यावरण शिक्षा,राधा प्रकाशन मन्दिर, आगरा ।